

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 19, शास्त्र, प्रेरणा के परिणाम, शास्त्र पर्याप्त, स्पष्ट, लाभकारी है

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 19 है, शास्त्र, प्रेरणा के परिणाम। शास्त्र पर्याप्त, स्पष्ट और लाभकारी है।

आइए हम सब मिलकर प्रार्थना करें, दयालु पिता। आपके वचन के उपहार के लिए धन्यवाद। इसके बिना हम कितने खो गए होते।

हमें इसे अत्यधिक सम्मान देने, इस पर विश्वास करने, इसका पालन करने और दिन-रात इस पर मनन करने में मदद करें, जैसा कि पहला भजन हमें करने के लिए प्रोत्साहित करता है। हम प्रार्थना करते हैं कि मध्यस्थ यीशु मसीह के माध्यम से हमें आशीर्वाद दें। आमीन।

हम प्रेरणा के परिणामों के बारे में बात कर रहे हैं। बाइबल प्रामाणिक है, यह परमेश्वर का वचन है, यह प्रामाणिक है, यह त्रुटिहीन है। पवित्रशास्त्र पर्याप्त है।

परमेश्वर का वचन उसके लोगों को अनंत जीवन पाने और ईश्वरीय जीवन जीने के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान करता है। इसे पवित्रशास्त्र की पर्याप्तता कहा जाता है। परमेश्वर का उल्लेख करते हुए, पतरस 2 पतरस 1:3 और 4 को समझाता है। ESV से पढ़ते हुए, पद 1 से शुरू करते हुए, यीशु मसीह के एक प्रेरित के सेवक शिमोन पतरस की ओर से, उन लोगों को जिन्होंने हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता के द्वारा हमारे समान स्तर का विश्वास प्राप्त किया है।

परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम्हें बहुतायत से मिले। उसी की ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें दिया है। उसी की पहचान के द्वारा जिसने हमें अपनी महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है, और उसी के द्वारा हमें बहुमूल्य और बहुत बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं। कि उनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में पाप की अभिलाषा से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।

इसी कारण तुम अपने विश्वास को सद्गुण से, और सद्गुण को ज्ञान से, और ज्ञान को संयम से, और संयम को धीरज से, और धीरज को भक्ति से, और भक्ति को भाईचारे की प्रीति से, और भाईचारे की प्रीति को प्रेम से बढ़ाने का यत्न करो। यदि ये गुण तुम में हों और बढ़ते जाएं, तो ये तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे या निष्फल न होने देंगे। पतरस परमेश्वर की सामर्थ की स्तुति करता है, क्योंकि वह हमें जीवन और भक्ति के लिये आवश्यक सब कुछ देती है।

हमें बस परमेश्वर को जानना है और पवित्रता का अनुसरण करना है। परमेश्वर की महिमा और भलाई, उसकी सुंदरता और नैतिक पूर्णता हमें उसके वचन के साथ उसके बहुत महान और अनमोल वादे देती है। बदले में, शास्त्र के वादे हमें परमेश्वर के स्वभाव में भाग लेने और दुनिया के भ्रष्टाचार से बचने में सक्षम बनाते हैं।

पद चार में, पतरस का मतलब यह नहीं है कि हम ईश्वरीय बन जाएंगे, बल्कि यह कि परमेश्वर की कृपा से, हम मसीह की वापसी पर उसकी नैतिक उत्कृष्टता को साझा करेंगे। अब भी, परमेश्वर अपने लोगों की ईश्वरीयता को बढ़ावा देने के लिए अपने वचन का उपयोग करता है। पवित्रशास्त्र उन लोगों को बचाने और पवित्र करने के लिए पर्याप्त है जो इस पर विश्वास करते हैं।

मैं वैन हूसर के काम के लिए एक अच्छा संदर्भ देने में विफल रहा जो मुझे देना चाहिए था। केविन वैन हूसर, बाइबिल साहित्य का शब्दार्थ, फिर से उसी पुस्तक में, हेर्मेनेयुटिक्स, अथॉरिटी, और कैनन। केविन जे. वैन हूसर, बाइबिल साहित्य का शब्दार्थ हेर्मेनेयुटिक्स, अथॉरिटी, और कैनन में।

यहीं पर वह सामग्री है जो मैं दे रहा था, वह शिक्षा जो मैं दे रहा था, वह भाषण क्रिया सिद्धांत से आती है और वैन हूसर द्वारा अचूकता शब्द का व्यापक अर्थ में उपयोग करने से संबंधित बाइबिल अध्ययनों पर लागू होती है जिसमें अचूकता, लेकिन अन्य विचार भी शामिल हैं। परमेश्वर का वचन भी हमारा मार्गदर्शन करने के लिए पर्याप्त है। पतरस वचन की तुलना एक दीपक से करता है जो अंधेरे कमरे में रोशनी प्रदान करता है।

जैसा कि हमने पहले ही देखा है, हमारे पास भविष्यवाणी का वचन है जो पूरी तरह से पुष्ट है, जिस पर ध्यान देना आपके लिए अच्छा होगा, जैसे कि यह एक दीपक है जो अंधेरे स्थान में तब तक चमकता रहता है जब तक कि दिन न निकल जाए और भोर का तारा आपके हृदयों में न उग जाए। हालाँकि दुनिया अंधेरी है, परमेश्वर के ज्ञान से रहित है, हमारे पास वचन है और हम इसे अपने पैरों के लिए दीपक और अपने मार्ग के लिए प्रकाश के रूप में मानते हैं, भजन 119, 106, दूसरे आगमन तक। हम इसका अनुसरण करते हैं।

यह हमारा मार्गदर्शन करता है। यह हमारा मार्गदर्शन करने के लिए पर्याप्त है। तर्क, अनुभव और परंपरा सभी का धर्मशास्त्रीय अध्ययन में एक स्थान है, जैसा कि हमने पुष्टि की जब हमने धर्मशास्त्र करने के लिए अपने अधिकारियों के बारे में सोचा, लेकिन वे पवित्र शास्त्र के अधीन हैं, जो अकेले पर्याप्त है, और यह सोला स्क्रिप्टुरा की सच्चाई तक पहुंचने का एक और तरीका है।

बाइबल ही हमारे जीवन और शिक्षा, सिद्धांत और नैतिकता के लिए पर्याप्त मार्गदर्शक है। यीशु के दृष्टांत में, जब नरक में एक अमीर आदमी पिता अब्राहम से पूछता है, जो भगवान के लिए बोलता है, यह ल्यूक 16 है, अमीर आदमी और लाजर का दृष्टांत, और हाँ, यह एक दृष्टांत है, इसमें कई परवलयिक विशेषताएँ हैं, केवल इसलिए कि नाम का उपयोग किया जाता है, यह वास्तविक ऐतिहासिक वास्तविकता प्रकरण नहीं बन जाता है, लेकिन यह एक दृष्टांत है। जब नरक में अमीर आदमी ने पिता अब्राहम, भगवान के रूप में, अपने अपश्चातापी भाइयों को चेतावनी देने के लिए

मृतकों में से किसी को भेजने के लिए कहा, तो अब्राहम ने कहा कि उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ता हैं।

उन्हें सुनने दो। नहीं, पिता अब्राहम, नरक में धनी व्यक्ति ने कहा, लेकिन अगर कोई मृतकों के पास जाता है, उनके पास जाता है, तो वे पश्चाताप करेंगे। पिता अब्राहम, ईश्वर की ओर से बोलते हुए कहते हैं कि अगर वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की बात नहीं सुनते हैं, तो वे तब भी नहीं सुनेंगे जब कोई मृतकों में से जी उठे।

लूका 16, 29 से 31. बाइबल पर्याप्त है। इसका संदेश पर्याप्त है।

उस दृष्टांत में विडंबना यह है कि जब लूका ने इसे लिखा था, तब यीशु मृतकों में से जी उठे थे, और बहुत से लोग अभी भी अविश्वास में थे। हालाँकि, शास्त्र की पर्याप्तता का मतलब यह नहीं है कि हमें एक-दूसरे या किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं है। जाहिर है, जैसा कि हमने धर्मशास्त्र की प्रक्रिया या विधि में चर्चा की, परमेश्वर हमें चर्च के नेता और शिक्षक देता है ताकि हम वचन को सीख सकें और उसे लागू कर सकें।

हमें दूसरों से सीखने की ज़रूरत है, और उन्हें भी हमारी ज़रूरत है। पवित्र शास्त्र की प्रेरणा से अलग-अलग परिणाम मिलते हैं। यह परमेश्वर का वचन है।

यह प्रामाणिक है। यह त्रुटिहीन है। यह पर्याप्त है।

और पवित्रशास्त्र भी स्पष्ट या सुस्पष्ट है। इसमें सुस्पष्टता और स्पष्टता के गुण हैं। परमेश्वर ने खुद को पवित्रशास्त्र में इस तरह प्रकट किया है कि परमेश्वर के लोग इसके मूल संदेश को समझने में सक्षम थे।

इसे शास्त्र की स्पष्टता या सुस्पष्टता कहा जाता है। वचन अनुभवहीन या सरल को बुद्धिमान बनाता है। भजन 19:7. माता-पिता को अपने बच्चों को वचन सिखाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 6:1 से 9. विश्वासियों से वचन को समझने की अपेक्षा की जाती है। हालाँकि, पवित्रशास्त्र की स्पष्टता का अर्थ यह नहीं है कि इसमें सभी बातें समान रूप से समझने में आसान हैं। रोमियों 11:33 से 36, जहाँ पौलुस यहूदियों और अन्यजातियों के साथ अपने व्यवहार में प्रकट परमेश्वर की बुद्धि पर आश्चर्यचकित होता है।

परमेश्वर का धन, बुद्धि और ज्ञान कितना गहरा है! उसके विचार कितने अथाह हैं, और उसके मार्ग कितने अगम हैं? क्योंकि यहोवा का मन किसने जाना है? या उसका सलाहकार कौन हुआ है? या किसने उसे कोई दान दिया है कि उसका प्रतिफल पाया जाए? क्योंकि उसी की ओर से, उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।

उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन। 2 पतरस 3:16 में पतरस कहता है, पौलुस के लेखन में कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें समझना कठिन है।

हम इसके लिए बहुत आभारी हैं। मुझे खुशी है कि पीटर ने ऐसा सोचा। शास्त्र की स्पष्टता।

इसका मतलब यह नहीं है कि सब कुछ समझना आसान है। इसका मतलब है कि सुसमाचार और बाइबल की बुनियादी शिक्षाएँ, जिनमें ईसाई जीवन से जुड़ी शिक्षाएँ भी शामिल हैं, समझी जा सकती हैं। परमेश्वर हमें सिखाने और बदलने के लिए अपने वचन से प्रेरित करता है।

और वह ऐसा प्रभावशाली और स्पष्ट रूप से करता है। वैश्विक चर्च के विचार। दक्षिण कोरिया के जुआन किम ने लिखा कि बाइबल केवल कुलीन वर्ग और विशेष रूप से कुछ चुनिंदा लोगों के लिए ही सुलभ नहीं है।

बाइबल की पुस्तकें, जो कई शताब्दियों में विभिन्न स्थानों से कई मानव लेखकों द्वारा लिखी गई हैं, इसकी स्पष्टता को कम नहीं करती हैं। ईश्वरीय लेखकत्व की विलक्षणता इसकी विषय-वस्तु और संदेश की निरंतरता और जैविक एकता की गारंटी देती है। फिर भी, जबकि बाइबल को कुछ स्थानों पर समझना कठिन है, यह बाइबल के लेखकों की ओर से किसी अभिजात्यवाद के कारण नहीं है।

बाइबल आम लोगों के लिए लिखी गई है, किसी तरह की स्वर्गीय भाषा या रहस्यमय कोड शब्दों का उपयोग नहीं किया गया है, बल्कि साधारण सरल भाषा का उपयोग किया गया है, जिसे बाइबल के पहले पाठक आसानी से समझ सकते थे। नतीजतन, जो लोग आज बाइबल को समझने की ईमानदारी से कोशिश करते हैं, वे अपने प्रयास में सफलता के प्रति आश्चस्त हो सकते हैं। जुआन किम, ईएसवी ग्लोबल स्टडी बाइबल में बाइबल की विश्वसनीयता और अधिकार।

उद्धरणों से पता चलता है कि यह वास्तव में वैश्विक है, है न? हालाँकि, विश्वासी लोग परमेश्वर की मदद से बाइबल पढ़ते हैं, क्योंकि पवित्र आत्मा उनका शिक्षक है। यह परमेश्वर द्वारा अपने वचन का प्रकाश है। प्रकाश पवित्र आत्मा का कार्य है जो लोगों को शास्त्र को समझने, विश्वास करने और लागू करने में सक्षम बनाता है।

वही आत्मा जो परमेश्वर के वचन को प्रेरित करती है, हमारे अंदर काम करती है ताकि हम उसके संदेश को ग्रहण करें। राजा नबूकदनेस्सर के अधीन बेबीलोन ले जाए गए निर्वासितों के बीच परमेश्वर के वचन का अकाल है, जो नहेमायाह और अन्य लोगों के साथ यरूशलेम लौट आए। नहेमायाह 7:4-7.

लोग एज्रा नामक शास्त्री से कहते हैं कि वह उन्हें शास्त्र पढ़कर सुनाए। नहेम्याह 8:1. वह सुबह से दोपहर तक वयस्कों और बच्चों के लिए शास्त्र पढ़कर सुनाता है ताकि वे समझ सकें।

उद्धरण: सभी लोगों ने व्यवस्था की पुस्तक को ध्यान से सुना। नहेमायाह 8:3. वचन उनके लिए स्पष्ट है, और वे इसे समझते हैं।

4, उद्धरण, सभी लोग सुनकर रो पड़े। उद्धरण बंद करें, श्लोक 9। जब उन्हें प्रोत्साहित किया गया, और उन्हें प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता थी, तो उन्होंने एक बड़ा उत्सव मनाया, उद्धरण, क्योंकि उन्होंने उन शब्दों को समझ लिया था जो उन्हें समझाए गए थे - श्लोक 12।

पवित्रशास्त्र स्पष्ट है। जब नहेमायाह नामक शास्त्री ने परमेश्वर के वचन की व्याख्या की और अन्य लेवियों ने उसकी सहायता की, तो लोगों को समझ प्राप्त हुई, और वे अपने पापों के कारण रोए, लेकिन परमेश्वर द्वारा अपने वचन में उन्हें दी गई क्षमा के कारण वे आनन्दित हुए। ईर्ष्यालु यहूदियों द्वारा थिस्सलुनीके में दंगा करने के बाद, विश्वासियों ने पौलुस और सीलास को बिरिया भेजा, प्रेरितों के काम 17:10।

जैसा कि उनका रिवाज है, वे आराधनालय में जाते हैं और मसीह का प्रचार करते हैं। प्रेरितों के काम के लेखक लूका ने बिरिया के लोगों की प्रशंसा करते हुए कहा, यहाँ के लोग थिस्सलुनीके के लोगों से ज़्यादा नेक चरित्र के थे, क्योंकि उन्होंने वचन को उत्सुकता से ग्रहण किया और प्रतिदिन पवित्रशास्त्र की जाँच की कि क्या ये बातें, जो प्रेरित सिखा रहे थे, सच थीं या नहीं—पद 11.

बिरिया के लोगों ने उत्सुकता और लगन से पुराने नियम का अध्ययन किया ताकि यह पता चल सके कि मसीह के बारे में पौलुस का संदेश सच है या नहीं। यहाँ शास्त्रों की स्पष्टता को माना जाता है। बिरिया के लोग मसीहा के बारे में पुराने नियम के संदेश को समझने में सक्षम थे।

उन्होंने उस संदेश की तुलना पौलुस के शब्दों से की और पाया कि उसके शब्द सत्य हैं। परमेश्वर का वचन स्पष्ट और शक्तिशाली है। "इसके परिणामस्वरूप, उनमें से बहुतों ने इस पर विश्वास किया, जिनमें कई प्रमुख यूनानी महिलाएँ और पुरुष भी शामिल थे।" प्रेरितों के काम 17 और पद 12।

अंत में, क्योंकि परमेश्वर का वचन प्रेरित है, क्योंकि बाइबल प्रेरित है, यह परमेश्वर का वचन है, यह आधिकारिक है, यह त्रुटिहीन है, यह स्पष्ट है, यह पर्याप्त और स्पष्ट है, यह लाभदायक भी है, और हमें इसे छोड़ना नहीं चाहिए। परमेश्वर का पवित्र वचन कई तरीकों से विश्वासियों के लिए उपयोगी और लाभदायक है।

सबसे पहले, यह अकेले ही उद्धार का संदेश लाता है, जैसा कि तीमुथियुस ने एक युवा व्यक्ति के रूप में सीखा था। पौलुस उसे याद दिलाता है, तुम जानते हो कि बचपन से ही तुम पवित्र शास्त्रों, पवित्र लेखों को जानते हो, जो तुम्हें मसीह यीशु में विश्वास के माध्यम से उद्धार के लिए बुद्धिमान बना सकते हैं। 2 तीमुथियुस 3:15.

दूसरा, परमेश्वर पादरी को उनकी सेवकाई के लिए सुसज्जित करने के लिए शास्त्र का उपयोग करता है। परमेश्वर ने अपने वचन को प्रेरित किया, उद्घरण, ताकि परमेश्वर का जन पूर्ण हो सके, हर अच्छे काम के लिए सुसज्जित हो सके। श्लोक 17.

इसके अलावा, पादरी का मुख्य कार्य परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के वचन की सेवा करना है। उद्घरण दें, वचन का प्रचार करें, समय और असमय तैयार रहें, डांटें, सुधारें, और बड़े धैर्य और शिक्षा के साथ प्रोत्साहित करें। दूसरा तीमुथियुस 4, 2. बेशक, महान प्रेरणा मार्ग, हालांकि यह तकनीकी रूप से परमेश्वर के लोगों, यानी पादरी को संबोधित है, यह निश्चित रूप से परमेश्वर के लोगों के झुंड पर भी लागू होता है।

तीसरा, शास्त्र झूठी शिक्षा के ज़हर के लिए परमेश्वर का प्रतिकारक है। शास्त्र पर नए नियम के दो महान अंश, 2 तीमुथियुस 3:16, 17, और 2 पतरस 1:20, और 21, ऐसे संदर्भों में सन्निहित हैं जो अंतिम दिनों में झूठी शिक्षा के बारे में चेतावनी देते हैं। 2 तीमुथियुस 4: 3 और 4, 2 पतरस 2:1 और 2 की तुलना करें। परमेश्वर अपने लोगों को अंतिम दिनों की विशेषता वाली झूठी शिक्षा से बचाने के लिए अपना वचन देता है।

चौथा, बाइबल परमेश्वर का मुख्य साधन है जो अपने लोगों को अनुग्रह में और मसीह के ज्ञान में बढ़ने में मदद करता है। पौलुस इस आशय का एक शक्तिशाली सामान्य कथन देता है। परमेश्वर ने शास्त्र दिया है, उद्धारण, और यह सिखाने, डांटने, सुधारने, धार्मिकता में प्रशिक्षण के लिए शक्तिशाली है, 2 तीमुथियुस 3:16।

इससे पहले कि मैं शास्त्र के लाभकारी गुणों के बारे में विस्तार से बताऊँ, स्पष्टता के अंतर्गत, मुझे इस सत्य का भी उल्लेख करना चाहिए था। हम शास्त्र की स्पष्टता की पुष्टि करते हैं, और हम वचन के साथ काम करने वाले पवित्र आत्मा के महत्व को महत्व देते हैं। इसलिए, हमारा मतलब आत्मा को छोड़ना नहीं था।

हमने आत्मा को नहीं छोड़ा, लेकिन इसे फिर से कहने की ज़रूरत है। आत्मा वचन को लेती है और श्रोताओं के जीवन में उसे प्रभावी बनाती है। वचन स्पष्ट है, लेकिन इससे आत्मा के काम करने की ज़रूरत खत्म नहीं होती।

बिना उद्धार पाए लोगों के जीवन में, वे आत्मा के काम के बिना उद्धार नहीं पा सकते। विश्वासियों के जीवन में, आत्मा हमारा मार्गदर्शन करती है, हमें सिखाती है और वचन के प्रति हमारे मन को प्रकाशित करती है, इत्यादि। जब विशेष रूप से बात आती है, तो परमेश्वर अपने लोगों की सेवा करने के लिए वचन का उपयोग कई तरीकों से करता है।

भजन 19 से हम सीखते हैं कि परमेश्वर का वचन जीवन को नया बनाता है, बुद्धि लाता है, आनन्द को बढ़ाता है, सत्य सिखाता है, चेतावनी देता है, तथा आशीष की ओर ले जाता है। भजन 19, 7-11. मुझे पक्का नहीं है।

हम सीखते हैं कि भजन 119, जो बाइबल का सबसे लंबा अध्याय है, उन तरीकों से भरा हुआ है जिनसे परमेश्वर अपने वचन का उपयोग हमें लाभ पहुँचाने के लिए करता है। शास्त्र, पद 38 और 79, परमेश्वर के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करता है। यह पद 9 और 11 को शुद्ध करता है।

यह शक्ति देता है, 28, 175. यह सांत्वना देता है, 50 और 52. यह जीवन देता है, आयत 93 और 156. यह आशा लाता है, आयत 49 और 116. यह विवेक देता है, 66. यह बुद्धि देता है, आयत 98 से 100. यह समझ लाता है, आयत 104, 130, 169. यह मार्गदर्शन देता है, 105, 130. यह केवल चयन हैं।

इनमें से प्रत्येक का उपयोग बाइबल के इस महान अध्याय के कई और भागों में किया गया है। परमेश्वर का वचन लाभदायक है क्योंकि यह हमारे अंदर वचन के प्रति ऐसी मनोवृत्ति उत्पन्न करता है जैसे कि उसके लिए तरसना, आयत 40, 131—उसमें आनन्दित होना, 16, 174।

इसका प्रेम, 97, 167. और भय, परमेश्वर और उसकी सच्चाई के प्रति उचित श्रद्धा और भय, श्लोक 120, 161. इसके अतिरिक्त, यह ध्यान को भी प्रेरित करता है, 15, 148. आज्ञाकारिता, 5, 112. आनन्द, श्लोक 2, 111. आनन्दित होना, 4, 162. आशा, 43, 147. और परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता, श्लोक 62. और एक बार फिर, इनमें से बहुतों के लिए, मैंने सिर्फ दो को चुना है।

और भी बहुत कुछ था। परमेश्वर के वचन का अमूल्य मूल्य हमें भजनकार के शब्दों को दोहराने के लिए मजबूर करता है। एक बार फिर, मैं ESV पर जाना चाहता हूँ।

भजन 119, पद 18. मेरी आंखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूँ। 72. तेरे मुँह की व्यवस्था मेरे लिये हजारों सोने और चान्दी के सिक्कों से भी उत्तम है।

हज़ारों। 89, हे यहोवा, तेरा वचन सदा स्वर्ग में दृढ़ रहता है। भजन 119, 89।

103, तेरे वचन मेरे लिए कितने मीठे हैं। मेरे मुँह में शहद से भी ज़्यादा मीठे हैं। और अंत में, 162, मैं तेरे वचनों से ऐसे आनन्दित होता हूँ जैसे कोई बड़ी लूट पाकर आनन्दित होता है।

दरअसल, रहस्योद्घाटन और शास्त्र के सिद्धांतों पर मेरा व्याख्यान यहीं समाप्त होता है। लेकिन मैं यह साझा करना चाहता हूँ कि हमारे पास ऐसा करने के लिए समय बचा है, इस महान पुस्तक से अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों के कुछ अद्भुत उत्तर। डीए कार्सन ने खुद या दूसरों के साथ मिलकर कुछ अद्भुत काम करने का बीड़ा उठाया है।

उन्होंने उन दो खंडों को दूसरों के साथ मिलकर लिखा, जिसमें कम से कम दो अन्य विद्वानों ने छंदों का संपादन किया और दो पुस्तकों में पॉल के लेखन, पॉल पर नए दृष्टिकोण से संबंधित बहस से उत्पन्न औचित्य से संबंधित मामलों का जवाब दिया। उन्होंने और ग्रेग बील ने पुराने के नए नियम के उपयोग पर एक शानदार किताब लिखी, जो एक बड़ी किताब है। यहाँ एक और बड़ी किताब है।

कार्सन इसके संपादक हैं। ईसाई धर्मग्रंथों का स्थायी अधिकार। कई सालों से हमें इस तरह की किताब की ज़रूरत थी।

कार्सन ने पाया कि यह 20, 37 प्रथम श्रेणी के इंजील विद्वान थे, जिनके पास सभी प्रकार की विशेषज्ञताएँ थीं। खैर, हम इस काम से अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों और अंत में अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों को संक्षेप में प्रस्तुत करके फल प्राप्त कर सकते हैं। पहला अंक उस अध्याय को संदर्भित करता है जहाँ प्रश्न पर चर्चा की गई है।

अवधि के बाद दूसरा अंक प्रश्न संख्या 1.1 है। आज धर्मग्रंथों के अधिकार पर इतनी तीखी बहस क्यों हो रही है? हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब कई प्रतिस्पर्धी आवाज़ें जीवन, संस्कृति, आध्यात्मिकता और बहुत कुछ के बारे में अपनी समझ को थोपने के लिए संघर्ष कर रही हैं। प्रामाणिकता के युग में, चार्ल्स टेलर के शब्दों में, जो हमें प्रामाणिक बनाता है वह यह है कि हम अधिकारियों के प्रति अंतर्निहित संदेह को अपनाते हैं ताकि हम खुद होने के लिए स्वतंत्र हो सकें।

बाइबल के दृष्टिकोण से, यह आंशिक रूप से ईश्वर से निंदनीय पलायन है, जो मूर्तिपूजा का एक रूप है।

1.2. बाइबल के अधिकार से जुड़े मुद्दे इतने जटिल क्यों हैं? जटिलता का एक बड़ा हिस्सा उन विषयों की सीमा से जुड़ा है जो इस बात को प्रभावित करते हैं कि हम बाइबल के अधिकार को कैसे समझते हैं। इनमें चर्च के इतिहास में विभिन्न बिंदुओं पर बाइबल के अधिकार को कैसे समझा गया है, सत्य क्या है, रहस्योद्घाटन की प्रकृति, व्याख्या के सिद्धांत, बाइबल में विभिन्न साहित्यिक शैलियों में अपने स्वयं के अलंकारिक अपील करने के विभिन्न तरीके, पाठ आलोचना, ज्ञानमीमांसा और बहुत कुछ शामिल हैं। क्या शब्द अचूकता बहुत बेकार नहीं है?

1.3. चूंकि इसे बहुत सावधानी से और तकनीकी रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए, इसलिए इसका उत्तर दें। धर्मशास्त्रीय शब्दावली के पंथ में बहुत कम शब्द हैं जिन्हें सावधानी से लिया जाना चाहिए और परिभाषित किया जाना चाहिए यदि सटीक संचार और गंभीर चर्चा होनी है। आखिरकार, ईश्वर, ईश्वर शब्द, औचित्य, सर्वनाशकारी आत्मा, पुनर्जन्म, पवित्रीकरण और बहुत कुछ पर विचार करें। हालाँकि, धर्मशास्त्रीय बहस में उपयोगी एक शब्द को सावधानी से परिभाषित किया जाना चाहिए।

इसका उपयोग न करने का कोई कारण नहीं है। अचूकता के संबंध में, अचूकता का सटीकता से कोई लेना-देना नहीं है, और यह निश्चित रूप से समझा जा सकता है कि पवित्र शास्त्र वाक्यों और खंडों की एक विस्तृत विविधता में लिखे गए हैं, जिनमें से सभी प्रस्ताव नहीं हैं।

2.1. चर्च के पिताओं, पैट्रिस्टिक काल के लेखन में शास्त्र क्या भूमिका निभाता है? ईसाई चर्च की शुरुआती शताब्दियों के ईसाइयों के बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन के केंद्र में शास्त्र था।

वे हमेशा इसे सही ढंग से नहीं समझ पाते थे, लेकिन वे इसे पसंद करते थे। वे इसके प्रति समर्पित थे। इस बारे में कोई सवाल नहीं है।

2.2. क्या नए नियम के कैनन का निर्माण एक बहुत ही बाद की घटना नहीं थी? प्राथमिक स्रोतों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने से पता चलता है कि प्रेरणादायी आधिकारिक लेखन के एक निश्चित समूह के रूप में कैनन की धारणा दूसरी शताब्दी में अच्छी तरह से स्थापित हो चुकी थी। क्या लूथर और कैल्विन ने प्रेरणा के अपने सिद्धांत, शास्त्र के अपने सिद्धांत को विकसित करते समय पर्याप्त नवाचार प्रदान किया? दोनों सुधारक शास्त्र के उस उच्च दृष्टिकोण के उत्तराधिकारी थे जो उन्हें प्रारंभिक चर्च और मध्ययुगीन विद्वानों से प्राप्त हुआ था। जहाँ तक शास्त्र की प्रकृति के बारे में उनकी समझ का सवाल है, उनका योगदान मुख्य रूप से बाइबल को कुछ चर्च संबंधी परंपराओं द्वारा उसके पालतूपन से मुक्त करने और रूपक को शायद ही सीमित करने में निहित था।

धर्मशास्त्रीय दृष्टि से, उनके शास्त्रों को संभालने में मसीह-केंद्रितता और औचित्य-केंद्रितता है जो उन्हें अलग करती है, लेकिन इस तरह की व्याख्या ने चर्च और विश्वासियों के जीवन में अन्य मामलों के लिए अधिकार के रूप में बाइबल पर ध्यान देने से इनकार नहीं किया।

3.2. क्या लूथर की प्रसिद्ध टिप्पणी कि याकूब एक बेकार पत्र है, यह प्रदर्शित नहीं करती कि वह शास्त्र को खारिज करने के लिए तैयार था जब यह उसके धर्मशास्त्र के अनुकूल नहीं था? इसके विपरीत उत्तर दें। उसी प्रस्तावना में, लूथर जोर देकर कहते हैं कि याकूब एक अच्छी किताब है क्योंकि यह कोई मानवीय शिक्षा नहीं देती बल्कि ईश्वर के कानून को जोरदार तरीके से प्रचारित करती है।

उद्धरण समाप्त। लेकिन लूथर किसी भी बाइबिल पाठ के महत्व का मूल्यांकन इस आधार पर करते थे कि उसमें मसीह और औचित्य की कितनी स्पष्टता से व्याख्या की गई है। यह निश्चित रूप से सच है।

इसलिए, जेम्स को उन्होंने भूसे के पत्र के रूप में चित्रित किया। हे भगवान। शास्त्र के सिद्धांत पर लूथर और केल्विन के विचार कितने समान हैं? 3.3. यानी, तीन का मतलब इस पुस्तक का तीसरा अध्याय है।

मैं समझ गया। ठीक है। समझ गया।

यह सही है। बिंदु के बाद, प्रश्न संख्या देखें। लूथर और केल्विन के विचार शास्त्र के सिद्धांत पर कितने समान हैं?

3.3. इन दोनों सुधारकों ने परमेश्वर के वचन के पूर्ण अधिकार को अपनाया, जिससे पवित्र आत्मा जिसने मानव लेखकों के माध्यम से पाठ को अस्तित्व में लाया, आज भी बोलता है।

उनके सूत्रों में थोड़ा अंतर उभर कर आता है। उदाहरण के लिए, लूथर विलियम ऑफ ओकहम से काफी प्रभावित था, जबकि केल्विन उससे प्रभावित नहीं था। फिर से, लूथर प्रेरणा शब्द का इस्तेमाल केल्विन जितना नहीं करता, लेकिन वह इस बात पर जोर देता है कि पवित्र आत्मा वास्तव में मूल में मौजूद थी और शास्त्र के उपयोग में वास्तव में मौजूद है।

4.1. मैं समझता हूँ। 3.3 का मतलब इस खंड के तीसरे अध्याय, तीसरे निबंध में है, यहाँ तीन प्रश्न सूचीबद्ध हैं। तो, 4.1, क्या 17वीं सदी के वैज्ञानिक, जैसे केपलर, गैलीलियो और न्यूटन, एक सदी पहले कोपरनिकस की तरह, मूल रूप से धर्मनिरपेक्षतावादियों की एक प्रारंभिक प्रजाति नहीं थे, जिनके वैज्ञानिक तरीकों ने उन्हें धर्मग्रंथों के अधिकार को चुनौती देने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया था? नहीं।

ये सभी लोग ईसाई या देववादी थे जो शास्त्रों का आदर करते रहे। लेकिन व्याख्यात्मक रूप से, वे तर्क देते थे कि जब प्राकृतिक व्यवस्था की बात आती है, तो बाइबल घटनात्मक रूप से बात करती है, जिसे हम आज पसंद करते हैं। और इनमें से कुछ वैज्ञानिकों ने ईश्वर द्वारा बनाई गई प्राकृतिक व्यवस्था का अध्ययन करके ईश्वर और उसके तरीकों के बारे में सीखने को उचित ठहराने के लिए शास्त्रों का पूरे अधिकार के साथ हवाला दिया।

4.3. तो, वैज्ञानिकों के बीच शास्त्रों के प्रति अधिक संदेहपूर्ण दृष्टिकोण कब उभरना शुरू हुआ? क्या ये अच्छे सवाल नहीं हैं? वाह। 18वीं सदी में भी, और तब भी, सबूत काफी मिश्रित हैं।

5.1. क्या यह सच नहीं है कि पिएटिस्ट, मेथोडिस्ट, होलीनेस और पेंटेकोस्टल परंपराओं में से कई ईसाई अपनी कुछ जड़ें स्पिनर और अन्य जर्मन पिएटिस्टों से जोड़ते हैं? और इसमें धर्मग्रंथों के बारे में उनके विचार भी शामिल हैं? हाँ, यह बात निश्चित रूप से सच है।

5.2. क्या यह सच नहीं है कि स्पिनर और अन्य शुरुआती पिएटिस्टों ने अचूकता को अस्वीकार कर दिया था, आंशिक रूप से लूथरन रूढ़िवाद के खिलाफ उनकी प्रतिक्रिया के कारण? यह सच है कि इस स्थिति को अक्सर मुखर किया जाता है, खासकर डोनाल्ड डेटन के लेखन में। लेकिन प्राथमिक स्रोतों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने पर पता चलता है कि यह बिल्कुल भी सच नहीं है। शुरुआती पिएटिस्ट, अपनी गवाही के अनुसार, पूरी तरह से अचूकतावादी खेमे में थे।

उन्होंने धर्मग्रंथों के लूथरन विचारों को अस्वीकार नहीं किया। बल्कि, उन्होंने लूथरन की लगातार आलोचना की कि वे अपने स्वयं के धर्मशास्त्र के अनुसार नहीं जी रहे हैं, इसलिए उन्हें पिएटिस्ट और पिएटिज्म नाम दिया गया। क्या कई वेस्लेयन स्पष्ट रूप से अचूकता पर पारंपरिक रुख को अस्वीकार करते हैं? कुछ लोग ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे पिएटिज्म पर प्राथमिक दस्तावेजों को गलत तरीके से पढ़ते हैं, ऊपर देखें, या क्योंकि वे इस विषय पर मुख्यधारा के वेस्लेयन विरासत से खुद को दूर रखते हैं।

अन्य लोग शास्त्र पर पारंपरिक वेस्लेयन रुख को अस्वीकार करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यह स्वतंत्र इच्छा बचाव के साथ असंगत है। हालाँकि, विलियम लेन क्रेग ने प्रदर्शित किया है कि उनका तर्क अजेय नहीं है।

7.1. पुराने प्रिंसटनियन कौन हैं, और उन्हें शास्त्र की प्रकृति पर बहस के संबंध में क्यों लाया जाता है? पुराने प्रिंसटनियन शब्द का अर्थ 19वीं शताब्दी में प्रिंसटन सेमिनरी में उल्लेखनीय रूप से विद्वान और प्रभावशाली धर्मशास्त्रियों और बाइबिल के विद्वानों से है, जिनमें आर्चीबाल्ड अलेक्जेंडर, चार्ल्स हॉज और बेंजामिन बी. वारफील्ड शामिल हैं, जो 20वीं शताब्दी की शुरुआत में काम कर रहे थे।

यह आम तौर पर आरोप लगाया जाता है कि अपने समय में धर्मग्रंथों के सिद्धांतों में घुसपैठ के खिलाफ अपने रक्षात्मक रुख में, उन्होंने सिद्धांत में नवाचारों को शामिल किया, जिससे वे अचूकता की पुष्टि करने से बच गए जो उनके पहले अज्ञात थी। अधिक सटीक रूप से, 7.2, पुराने प्रिंसटन के लोगों पर क्या करने का आरोप है? स्कॉटिश सामान्य ज्ञान यथार्थवाद और विज्ञान के बेकनियन दृष्टिकोण के प्रभाव में, पुराने प्रिंसटन के लोगों ने कथित तौर पर बाइबिल को अचूक सत्यों के भंडार के रूप में देखा, जिसे केवल एक विश्वसनीय व्यवस्थित धर्मशास्त्र संकलित करने के लिए वैज्ञानिक तरीके से सावधानीपूर्वक एकत्र करने की आवश्यकता थी। क्या पुराने प्रिंसटन के लोगों के खिलाफ आरोप उचित हैं? जबकि वे अपने समय के लोग थे जिन्होंने निस्संदेह गलतियाँ की थीं, पुराने प्रिंसटन के लोगों ने चर्च की क्लासिक और आम विरासत पर खड़े होने के लिए अचूक शास्त्र के अपने बचाव को सही ढंग से समझा।

उनके समय में, चर्च की शिक्षाओं की नवीन आलोचनाएँ कांटियन और हेगेलियन आधारों पर समेकित की जा रही थीं। उनके बचाव में ईमानदारी से चर्च की शिक्षाओं को दोहराया गया और इसमें बेकनियनवाद और स्कॉटिश सामान्य ज्ञान यथार्थवाद की तीखी आलोचनाएँ शामिल थीं। उन्होंने भोलेपन से कुछ नहीं किया।

वे बहुत प्रतिभाशाली थे। सच तो यह है कि वे अपने समय के विज्ञान को भी अच्छी तरह जानते थे। वाकई कमाल की बात है।

उन्होंने बेकनवाद और स्कॉटिश सामान्य ज्ञान यथार्थवाद की तीखी आलोचना की थी। जैसा कि सीमैन कहते हैं, उद्धरण, बाइबिल के अधिकार पर चर्च की शिक्षा की प्रिंसटन की पुनः पुष्टि और बचाव एक अप्रतिरोध्य ज्ञानमीमांसा रुख के प्रति कृतज्ञ नहीं है, उद्धरण समाप्त। इतना ही नहीं, बल्कि हॉज और वारफील्ड दोनों ने व्यवस्थित धर्मशास्त्र को जिम्मेदारी से कैसे बनाया जाता है, इसे समझने में उल्लेखनीय गहराई दिखाई।

इसे यांत्रिक संग्रह, तथ्यों के संकलन के रूप में देखने से बहुत दूर। मुझे लगता है कि इनमें से कुछ हमले ऐसे लोगों द्वारा किए गए हैं जिन्होंने कार्ल हेनरी, उदाहरण के लिए, या वॉरफील्ड को नहीं पढ़ा है। हाँ, उन्होंने गलतियाँ कीं, लेकिन वाह।

समायोजन का क्या अर्थ है? फादर्स, द मिडिल एज और केल्विन में, समायोजन का विषय आंशिक रूप से उन तरीकों पर चिंतन से उत्पन्न हुआ, जिनसे एक अनंत और पवित्र ईश्वर अपने सीमित और पापी छवि धारकों के साथ संवाद कर सकता है। वह खुद को समायोजित करके, केवल खुद को उनकी सीमाओं के अनुकूल बनाकर ऐसा कर सकता था, और आंशिक रूप से धर्मग्रंथ के पाठ में स्पष्ट विरोधाभासों को समझाने के तरीके के रूप में। भाषा को अक्सर आम इंसानों की समझ के हिसाब से समायोजित किया जाता है, यानी कुछ चीजों का वर्णन घटनात्मक भाषा में करके, जो, निश्चित रूप से, हम आज भी करते हैं जब हम ऐसी बातें कहते हैं जैसे कि सुबह 5:39 बजे सूरज उगेगा। क्या आज समायोजन को आम तौर पर इसी तरह समझा जाता है? ज्ञानोदय के उत्तरार्ध में, जबकि कुछ लोग स्पिनोजा का अनुसरण करते थे और बाइबिल के अधिकार को अस्वीकार करते थे, कई विद्वानों ने बाइबिल के अधिकार की किसी प्रकार की धारणा को बनाए रखा, लेकिन सोसिनस के प्रभाव में, जिनके समायोजन के विचारों में यह दावा भी शामिल था कि धर्मग्रंथों में कई प्रकट त्रुटियाँ, त्रुटिपूर्ण मानव प्राणियों के लिए ईश्वर द्वारा समायोजन से अधिक कुछ नहीं थीं।

जो लोग समायोजन के इस हालिया दृष्टिकोण को मानते हैं, जिसमें कई तरह की त्रुटियों को आसानी से अपनाया जाता है, वे यह कहते हुए गुमराह कर रहे हैं कि समायोजन हमेशा से ही शास्त्रों के परिष्कृत उपचारों का हिस्सा रहा है। हालाँकि यह कथन पहले सच था, लेकिन यह कथन इस बात को छिपाता है कि हाल की शताब्दियों में समायोजन की धारणा किस तरह बदल गई है। किसी विषय पर चर्चा जटिल हो गई है।

तर्क दिया जा सकता है कि केल्विन ने समायोजन को ईश्वर की कृपा से जुड़ी एक धार्मिक श्रेणी के रूप में देखा, और अवतार में कुछ तरीकों से इसका उदाहरण दिया। यह इसे केवल एक

अलंकारिक और व्याख्यात्मक उपकरण के रूप में देखने से बहुत दूर है। कार्ल बारथ के धर्मग्रंथों के विचार आज इतने अधिक ध्यान के केंद्र में कैसे आ गए हैं? इसके कम से कम तीन कारण हैं।

सबसे पहले, बारथ निश्चित रूप से 20वीं सदी के सबसे विपुल और शायद रचनात्मक धर्मशास्त्री थे, इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि लोग उनके लेखन का अध्ययन करते हैं। दूसरा, बारथ का विचार गहराई से ईश्वर-केंद्रित, गहराई से मसीह-केंद्रित और गहराई से अनुग्रह-केंद्रित है। और तीसरा, शास्त्र के बारे में उनका दृष्टिकोण, हालांकि पारंपरिक स्वीकारोक्तिवाद के अनुरूप नहीं है, लेकिन श्रद्धापूर्ण, सूक्ष्म और जटिल है।

इसलिए, विद्वान इस बात पर बहस करते रहते हैं कि वह वास्तव में क्या कह रहा था। क्या बारथ यह नहीं कहता कि बाइबल ईश्वर का वचन नहीं है, बल्कि जब इसे विश्वास के द्वारा ग्रहण किया जाता है, तो यह ईश्वर का वचन बन जाता है? वास्तव में, वह दोनों की पुष्टि कर सकता है। सवाल यह है कि उसका क्या मतलब है? बारथ के लिए बनने वाली भाषा उसके इस आग्रह से जुड़ी है कि शब्द का प्रारंभिक रहस्योद्घाटन और व्यक्तिगत विश्वासी के लिए इसका रहस्योद्घाटन एक अनुग्रहपूर्ण पूरे में एक साथ बंधे हुए हैं।

प्रेरणा के बारे में बारथ के दृष्टिकोण के साथ भी यही बात सच है। वह बाइबल को अपने आप में प्रेरित मानने से इनकार करता है, लेकिन पारंपरिक रूप से जिसे शास्त्र की प्रेरणा और आस्तिक की रोशनी कहा जाता है, उसे एक साथ जोड़ता है। क्या बारथ का दावा नहीं है कि जहाँ तक शास्त्र के बारे में उनके दृष्टिकोण का सवाल है, वे सुधारकों के साथ खड़े हैं? हाँ, वे ऐसा करते हैं, लेकिन वे स्पष्ट रूप से गलत हैं।

उदाहरण के लिए, कैल्विन के साथ तुलना करें, कुछ ऐसे उदाहरणों पर जहाँ कैल्विन खुशी से शास्त्र की प्रेरणा के बारे में बात करते हैं, पाठ स्वयं ईश्वर द्वारा प्रेरित है, भले ही विश्वासियों को यह प्राप्त हो या न हो। बारथ पाठ और विश्वासियों दोनों में ईश्वर की आत्मा के बाहर निकलने की बात करते हैं, इस प्रकार वे खुद को शास्त्र की व्याख्या और सुधार परंपरा दोनों से दूर रखते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे चर्च डॉगमैटिक्स 2-2 पैराग्राफ 3e में कैल्विन से अपनी दूरी को पहचानते हैं।

क्या बारथ मानते हैं कि शास्त्र में गलतियाँ हैं? हाँ, वे मानते हैं, हालाँकि वे उन्हें पहचानने से इनकार करते हैं। बारथ शास्त्र की मानवीयता का हिस्सा प्रतीत होते हैं, हालाँकि वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ईश्वर का रहस्योद्घाटन करने वाला अधिकार संपूर्णता को, त्रुटियों सहित सभी को शामिल करता है। बदले में, यह अनिवार्य रूप से इस बारे में सवाल उठाता है कि शास्त्र के उन अंशों को कैसे ईश्वर का रहस्योद्घाटन करने वाला अधिकार कहा जा सकता है जिनमें पहचानी नहीं गई त्रुटियाँ शामिल हैं।

10:1. क्या रोमन कैथोलिक चर्च भी धर्मग्रंथ के बारे में वही दृष्टिकोण रखता है जिसे आप क्लासिक या पारंपरिक बता रहे हैं? हां, वास्तव में, कई शताब्दियों से और हाल ही तक, कैथोलिक धर्म इस बात को मानने वाले मुख्य लोगों में से एक रहा है कि बाइबल ईश्वर द्वारा अद्वितीय रूप से प्रेरित और त्रुटिहीन है, लेकिन यह पूरी तस्वीर नहीं है। कैथोलिक धर्म ने यह भी माना है कि परंपरा का अधिकार धर्मग्रंथ के बराबर है, और किसी भी मामले में, चर्च का शिक्षण

अधिकार, मैजिस्टेरियम, अकेले ही यह निर्धारित करता है कि धर्मग्रंथ और परंपरा का क्या अर्थ है। इस प्रकार, जहाँ तक धर्मग्रंथ की प्रकृति को समझने की बात है, रोम के साथ सुधारकों का तर्क धर्मग्रंथ की प्रकृति पर इतना नहीं था जितना कि इसकी अनन्य पर्याप्तता पर था।

उन्होंने कहा कि मैजिस्टेरियम पर्याप्त नहीं है। वास्तव में, कई बार पोप और परिषदों की आधिकारिक घोषणाएं गलत रही हैं। आपका क्या मतलब है कि हाल ही तक, धर्मग्रंथ की प्रकृति के बारे में कैथोलिक धर्म के विचार बदल गए हैं? पिछली शताब्दी या उससे भी पहले, कैथोलिक धर्म ने धीरे-धीरे धर्मग्रंथ के मानवीय आयामों को पहले की तुलना में अधिक मान्यता दी है।

हालाँकि, वेटिकन II ने एक अधिक नाटकीय बदलाव का संकेत दिया। उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद से प्रभावित होकर, वेटिकन II, 1962-65 में कैथोलिक चर्च ने पारंपरिक भाषा के अधिकांश भाग को संरक्षित करने की कोशिश की, जबकि धर्मग्रंथ में बहुत सी ऐसी बातें शामिल थीं जिन्हें पिछली पीढ़ी ने गलतियाँ समझा होगा। क्या इस बात पर विद्वानों की आम सहमति है कि पुराने नियम का कैनन कब कमोबेश स्थिर था? नहीं।

न्यूनतमवादियों और अधिकतमवादियों के बीच एक तीव्र विभाजन है। पूर्व का मानना है कि पुराने नियम के सिद्धांत का निर्माण दूसरी शताब्दी के ईसाई युग तक शुरू नहीं हुआ था और दो शताब्दियों बाद भी इस पर विवाद हो रहा था। अधिकतमवादियों का तर्क है कि पुराने नियम के सिद्धांत दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक स्थिर थे, और ईसा के बाद रब्बी की चर्चाएँ अनिवार्य रूप से पुष्टिकारक थीं।

इन दोनों पक्षों के बीच किस तरह के सबूतों को लेकर लड़ाई चल रही है? हमारे पास उतने सबूत नहीं हैं जितने हम चाहते हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण पाठ जोसेफस का अगेंस्ट एपियन है, जो पहली शताब्दी ई.पू. या ई.पू. के अंत में लिखा गया था। कैनन में पुस्तकों को सूचीबद्ध किए बिना, जोसेफस स्पष्ट रूप से हिब्रू कैनन की पुस्तकों के बारे में बात करता है जो कुछ शताब्दियों पहले मौजूद थीं। बाद में रब्बी की चर्चाएँ उसी दिशा में जाती हैं।

मिनिमलिस्ट जोसेफस की विश्वसनीयता पर हमला करते हैं और रब्बीनिक स्रोतों के अर्थ पर बहस करते हैं। मैक्सिमलिस्ट न केवल जोसेफस को सच मानते हैं, बल्कि उनके स्पष्ट शब्दों को समझाने के प्रयासों को भी अविश्वसनीय मानते हैं। इज़राइल के इतिहास के बारे में विद्वानों के बीच 12.1 के बीच महत्वपूर्ण मतभेद हमारे ईसाई धर्म के लिए क्यों मायने रखते हैं? वे दो कारणों से मायने रखते हैं।

एक, बाइबिल में वर्णित ईसाई धर्म का एक बड़ा हिस्सा ऐतिहासिक धर्म के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अर्थात्, ईश्वर ने इतिहास में, अंतरिक्ष-समय सातत्य में घटित होने वाली घटनाओं के माध्यम से स्वयं को हमारे सामने प्रकट किया है। इसका सर्वोच्च उदाहरण मसीह का पुनरुत्थान है।

प्रेरित ने स्पष्ट किया कि यदि मसीह वास्तव में मृतकों में से नहीं जी उठा, तो हमारा पूरा विश्वास एक दिखावा है। इस्राएल का इतिहास, एक अर्थ में, इस बात का एक उपयोगी परीक्षण मामला है

कि ईसाई इतिहास और उस इतिहास में परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण के बारे में कैसे सोचते हैं। पुराने नियम में, सबसे महत्वपूर्ण मुक्तिदायी घटना निर्गमन है।

दो बाइबिल ग्रंथ जो हमें यह बताने का दावा करते हैं कि अतीत में क्या हुआ था, वे अंश हैं जहाँ दिव्य रहस्योद्घाटन विश्वसनीय रिपोर्ट के सामान्य दावों के साथ मेल खाता है। यदि धर्मग्रंथ पर भरोसा नहीं किया जा सकता है जहाँ इसके दावों को सबसे आसानी से सत्यापित या गलत ठहराया जा सकता है, तो अन्य क्षेत्रों में इस पर भरोसा क्यों किया जाना चाहिए?

12.2. फिर अधिक दबाव वाला सवाल यह है कि, इस्राएल के इतिहास के बारे में ये मूलभूत मतभेद क्यों मौजूद हैं? विद्वान ऐसे मामलों पर सहमत क्यों नहीं हो सकते? यह एक अच्छा सवाल है और विद्वानों द्वारा स्वयं इस पर बहुत कम ही सीधे चर्चा की जाती है। बहुत बार, उनके संबंधित नियंत्रण विश्वासों में गहरा अंतर होता है।

उदाहरण के लिए, कुछ विद्वान दार्शनिक प्रकृतिवाद के प्रति गहराई से प्रतिबद्ध हैं, जो कथित रूप से ऐतिहासिक क्षेत्र में होने वाले मामलों की चर्चाओं में अलौकिक प्रभाव या शक्ति की सभी अपीलें से बचते हैं। अन्य लोग आश्चर्य हैं कि बाइबल के ईश्वर के बारे में किसी भी चर्चा में उसे स्पष्ट रूप से अलौकिक तरीकों से कार्य करने की अनुमति दी जानी चाहिए। ये नियंत्रित करने वाली मान्यताएँ अनिवार्य रूप से इस बात को प्रभावित करती हैं कि हम बाइबल के ग्रंथों को कैसे पढ़ते हैं।

क्या यह पुष्टि करना कोई मायने रखता है कि बाइबल मूल रूप में त्रुटिहीन है, जबकि हमारे पास हस्ताक्षर नहीं हैं? यह बार्ट एहरमन और अन्य लोगों की सबसे अधिक बार दोहराई जाने वाली आपत्तियों में से एक है। इस आपत्ति में एक निश्चित सतही संभावना है, लेकिन करीब से निरीक्षण करने पर, यह बाइबल, पाठ और मूल जैसे शब्दों की बहुलता पर निर्भर करता है। इन अभिव्यक्तियों में बहुलता से आपका क्या मतलब है?

13.2. यह केवल यह कहने का एक तरीका है कि इन शब्दों का अलग-अलग संदर्भों में थोड़ा अलग अर्थ हो सकता है।

उदाहरण के लिए, बाइबल का मतलब किताबों का संग्रह हो सकता है जो पवित्र शास्त्र का निर्माण करते हैं। वैकल्पिक रूप से, इसका मतलब किसी विशेष प्रति से हो सकता है। मूल का मतलब शास्त्र की मूल भाषाओं से हो सकता है, या इसका मतलब किसी हस्तलिखित लेख से हो सकता है।

पाठ का तात्पर्य उस वास्तविक पांडुलिपि से हो सकता है जिस पर कुछ लिखा या मुद्रित किया गया हो, या यह किसी ठोस चीज़ के संदर्भ के बिना शब्दों में एनकोड किए गए संदेश को संदर्भित कर सकता है। अचूकता के बारे में चर्चाओं के लिए इससे क्या फ़र्क पड़ता है? एहरमन और अन्य लोगों का कहना है कि जब इंजीलवादी पाठ की अचूकता की पुष्टि करते हैं, तो वे, इंजीलवादी, किसी ऐसी चीज़ की अचूकता पर ज़ोर दे रहे होते हैं जो उनके पास नहीं है, यानी मूल पाठ। लेकिन इंजीलवादियों द्वारा अचूकता के परिष्कृत उपचार उस दावे को पूरा नहीं करते हैं।

वॉरफील्ड की तरह, जब वे पाठ के बारे में बात करते हैं, तो वे अमूर्त परिभाषा, शास्त्रों के संदेश का उल्लेख कर रहे होते हैं। दूसरे शब्दों में, एहरमन आपत्ति एक स्ट्रॉमैन पर हमला कर रही है। इसी तरह की गलती कई अभिव्यक्तियों के संबंध में की जाती है और कभी-कभी, दुख की बात है कि, इंजीलवादियों द्वारा खुद भी की जाती है।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम इस अद्भुत हाल ही की पुस्तक, द एंड्यूरिंग अथॉरिटी ऑफ द क्रिस्चियन स्ट्रिप्स के बारे में कुछ अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों को जारी रखेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 19 है, शास्त्र, प्रेरणा के परिणाम। शास्त्र पर्याप्त, स्पष्ट और लाभकारी है।